द्वितीय अध्याय

'शम्बूक' में वर्णित राजनीतिक समस्या।

'शम्बूक ' मे वर्णित राजनीतिक समस्या

डॉ. जगदीश गुप्त की काव्यकृतियों में 'शम्बूक ' का विशिष्ट स्थान है । अपने नाम के अनुरुप वह मात्र रामायण की कथा से संबंद्ध है, वरन कवि नें 'शम्बूक ' के माध्यम से समाज की अनेक समस्याओं को उठाया है । इस काव्य में कवि ने राम को मानवीय संदर्भ में प्रस्तुत किया है । स्वयं कवि ने कविकथन में अपनी भूमिका स्पष्ट की है - " नये युग के अनुरुप अधुनातन मनोभूमि पर राम के कर्मशील लौकिक राजसी चरित्र को शम्बूक के माध्यम से प्रश्नांकित कराते हुए प्रस्तुत करने की चेष्टा भी उसीकी पूरक है । "[1]

'शम्बूक ' के माध्यम से कवि ने अपने विचारों को व्यक्त किया है । शम्बूक कवि की वाणी का वाहक है । प्रस्तुत कृति में कवि ने अनेक राजनितीक, सामाजिक, समस्याओं को उठाया है और परोक्ष रुप में उसके समाधान प्रस्तुत किये हैं । युगों-युगों से दबी हुई मानवता की आवाज है- 'शम्बूक ' । आज भी ऐसे अनेकों शम्बूक हैं, जिन्हें प्रस्थापित व्यवस्था में अपनी जबान पर ताला ठोकना पडता है । लेकिन कवि उन्हीं शम्बूकों की दबी हुई आवाज को अपनी इस कृति के माध्यम से उद्घोषित करता है । इसीलिए स्वयं रचनाकार को भरोसा है कि-

" शम्बूक को एक प्रखर एवं जागरुक व्यक्तित्व मिल सका हैं, ऐसा मुझे लगता है।"[2] शम्बूक विद्रोही है, क्रांतिकारी है । फलस्वरुप वह रुढिवादी परंपरा का विरोध करता है । वह अपने अधिकार के प्रति जागृत है । वह अधिकार है अपनी खोयी हुई मानवता को प्राप्त करने का । जगदीश गुप्त के काव्य का हर संदर्भ समाज एवं मानव से जुड़ा हुआ है। 'शम्बूक' की रचना का उद्देश भी यही रहा है। इसलिए भूमिका में स्वयं कवि ने कहा है -

" मेरी कृति में मनुष्यत्व से श्रेष्ठ नहीं कुछ ।"[3] कवि की दृष्टि में शम्बूक भूमिपुत्र है । वह शोषित का प्रतिक है । शम्बूक कहता है -

'शूद्र हूँ मैं
मानव समाज में
मेरा अस्तितव बहुत अल्प है
फिर भी
जाने क्यों मेरे मन में
युग युग से परिभाषित

व्यक्ति के चरित्र को
मानव भविष्य की
नये संदर्भो में
जानने समझने का
उपजा संकल्प है ।" [5]

इन पक्तियों से स्पष्ट होता है कि मानव समाज में विषमता है । मनुष्य को सच्चे मानव के रुप में देखने का प्रयास ही प्रस्तुत रचना में किया है । रुढिवादी समाज की असहनीय विषमता तथा उसकी मानसिक यातना का स्वरुप इस रचना में सशक्त होकर अभिव्यक्त हुआ है ।

'शम्बूक ' काव्य की कथा पुरानी है लेकिन उसमें व्यथा नई है । आज आधुनिक युग के लघु मानव की शोषित दशा का अंकन शम्बूक में हुआ है । आज के युग में राजनीतिक ,सामाजिक,एवं धार्मिक चक्की में आज भी कुछ शम्बूक पीसे जा रहे हैं । अतः प्रस्तुत अध्याय में'शम्बूक' में वर्णित राजनीतिक समस्याओं का विवेचन किया है ।

राजनीतिक समस्या -

अनेकों आधुनिक कवियों ने राजनिती के बारे में विचार व्यक्त किये हैं। शास्त्र की दृष्टि से ' राजनीति ' में राज्य अथवा राजनीतिक समाज पर विचार किया जाता है । आधुनिक कवियों ने राजनिती, राज्य, राज्य प्रणालियाँ, राज्यसंबंधी मामले समस्याएँ, नीतियाँ, आदर्श राज्य, जनता के कर्तव्य तथा अधिकार, और अंतरराष्ट्रीय संबंध आदि विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये हैं । इन कवियों ने राज्य किस तरह प्राप्त किया जाता है? इसके संबंध में पात्रों के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये हैं। राज्य किसके लिए होता है ? इस संबंध में यही भाव व्यंजित होता है कि राज्य प्रजा के लिए है ।

डॉ. जगदीश गुप्त भी आधुनिक काल के कवि हैं। इन्होंने 'शम्बूक ' लघुकाव्य के माध्यम से अपने राजनीतिक विचार व्यक्त किये हैं। इस काव्य में 'शम्बूक-वध' की पुरानी कथा का आधार लेकर आज की राजनीतिक समस्यांओं को उठाया है । उसके साथ ही इन समस्याओं का समाधान भी करने का प्रयत्न किया है । कविकथन में स्वयं कवि ने इस खण्डकाव्य को 'लघुकाव्य' की संज्ञा दी है । इस लघुकाव्य के माध्यम से कविने निम्नांकित राजनीतिक समस्याओं

का विवेचन किया है जिनपर हम क्रमशः विचार करेंगे।

अ **निरंकुश राजसत्ता -**

शासन के अनेक रुप होते हैं, जिसमें राजतंत्र,अभिजात तंत्र,या कुलीन तंत्र, लोकतंत्र, सैन्यतंत्र या सैनिक शासन आदि प्रकार की राजसत्ता होती है । चाहे कौनसा भी शासन का रुप हो, उसमें शासन संस्था सर्वोपरी होती है । 'शम्बूक ' में गुप्तजी ने राम के राज्य का वर्णन किया है । राम अयोध्या का राजा है । अयोध्या में रहनेवाली आम जनता का हृदय है- अयोध्यापति राम। राम तत्कालीन राजव्यवस्था में श्रेष्ठत्व प्राप्त राजा है। राम की न किसी राजा के साथ तुलना की जाती है और न किसी राज्य से अयोध्या की तुलना हो सकती है -

"यह अयोध्या का हृदय
प्रत्यक्ष है
कौन इससे अधिक है,
समकक्ष है ।" 5

इस प्रकार गुप्तजी ने राम और राम- राज्य को सर्वोपरी माना है । राजसत्ता के विरुद्ध यदि कोई आवाज उठाता है या राजा के निर्णय का विरोध करता है, तो उसे कुचल दिया जाता है।

राम-राज्य में विप्र बालक को सर्पदंश हुआ और इसके कारण विप्र बालक मर गया। इस अनर्थ का कारण शम्बूक तप माना जाता है । नारद और वशिष्ठ द्वारा राम को परामर्श दिया जाता है कि यदि राम वन में जाकर शम्बूक का वध करेंगे , तो विप्र-बालक जीवित होगा । इस बात पर राम विश्वास रखता है और शम्बूक का वध करने का निर्णय मान लेता है। परंतु अयोध्या में कोई भी व्यक्ति राम के इस निर्णय का विरोध नहीं करता । इस घातक राजव्यवस्था के संबंध में कवि ने शम्बूक के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये हैं । इसलिए शम्बूक अपनी प्रखर वाणी में राम से कहता है -

" जो व्यवस्था
व्यक्ति के सत्कर्म को भी
मान ले अपराध

जो व्यवस्था

फूल को खिलने न दे

निर्बाध

जो व्यवस्था

वर्ग सीमित स्वार्थ से

हो ग्रस्त

वह विषम

घातक व्यवस्था

शीघ्र ही हो

अस्त । " 6

शम्बूक राम की व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगाता है । राम की व्यवस्था में सत्कर्म के लिए कोई स्थान नहीं है। तपस्या के सत्कर्म को भी राम की व्यवस्था में विरोध है । ऐसी व्यवस्था जो सत्कर्म को भी अपराध मान ले और जो स्वतंत्र विचारों के फूलों को खिलने न दे और जो वर्ग-सीमित स्वार्थ से ग्रस्त हो, ऐसी घातक व्यवस्था शीघ्र ही समाप्त हो जानी चाहिए ।

भारत में सन 1947 से स्वतंत्रता के साथ प्रजातंत्र की स्थापना हुई ।.स्वराज्य मिल गया परंतु उसका सुराज्य बन जाने में अनेक प्रकार की दिक्कतें निर्माण हुईं । वर्ग-सीमित स्वार्थ के कारण समाज में समानता निर्माण नहीं हो सकती । राम-राज्य में शुद्र, बाह्मण ऐसी वर्ग सीमित व्यवस्था थी परंतु आज के परिवर्तित युग में सट्टा बाजारवाले, दलाल, तस्कर तथा बडे बडे उद्योगपति आज की वर्ग-सीमित व्यवस्था है । इस व्यवस्था के हित की दृष्टि से ही राजनीतिज्ञ निर्णय लेते हैं।

राजसत्ता के विरद्ध प्रश्नचिह्न लगाता हुआ शम्बूक कहता है कि सभी लोग अपने कर्मों के कारण ही अच्छा बुरा परिणाम भोगते हैं। शूद्र तप से विप्र बालक मर गया, शूद्र वध से -विप्र बालक जी उठा यह सब कल्पना की बातें हैं। राजसत्ता ने सतर्कता से कार्यकारण संबंध को भी अजमाना चाहिए । चापलूसों के कहने पर कोई निर्णय लेना चापलूसों के हित के लिए होता है, पर वही निर्णय आम जनता के लिए चक्की के पाट बन जाता है । इसीलिए शम्बूक राम के राज्य को व्यर्थ घोषित करते हुए कहता है -

"किस तरह सोचा गया यह
किस तरह माना गया यह
किस तरह समझा गया यह
किस तरह जाना गया यह।" 7

इस प्रकार शम्बूक के मतानुसार जनता के हित एवं कल्याण से जुडी राजनीति नहीं है । वह तो कुर्सी से चिपकी चापलूसों की राजनीति बन चुकी है ।

शम्बूक ने राम की व्यवस्था पर प्रहार किया कि उनकी व्यवस्था में सत्कर्म को भी अपराध माना जाता है । तब राम शम्बूक को उत्तर देता है कि, जिस व्यवस्था को लोग स्वीकार करते हैं और राज्य भी जिसका सम्मान करता है, वह व्यवस्था हितकर होती और सारी प्रजा को भी वही मान्य होती है। राम आगे स्पष्ट करता है कि यदि इस व्यवस्था को भंग करने का कोई संकल्प करता है, तो उसे प्रश्न करने का अधिकार नहीं होता। व्यवस्था भंग कर वह जो अमर्यादित आचरण करता है, उसी के ऊपर दंड का सारा भार पडता है ।

इस प्रकार राजा की निरंकुश सत्ता होती है । राजसत्ता के द्वारा राजा को कई अधिकार प्राप्त होते हैं । राजा की सत्ता सभी को माननी पडती है । राजा अपने अधिकार का दुरुपयोग भी कर सकता है । अधिकार और सत्ता के बल पर प्रजापर अन्याय और अत्याचार किया जाता है । इसका विवेचन करते हुए कवि ने आज की लोकतांत्रिक सत्ता पर करारा व्यंग्य किया है । आज वर्ग-सीमित स्वार्थ के कारण सामान्य जनता पर अन्याय, अत्याचार किया जाता है। गरीब गरीब रहने लगे हैं और अमीर अमीर ही बनते जा रहे हैं । यह विषमता की खाई निरंकुश राजसत्ता के कारण बढती जा रही है ।

आ. आम जनता से विमुख राजनीति -

ब्राह्मण -पुत्र की अकाल मृत्यु से राम और उनका दरबार चिंतित है । प्रजा- जन राम की आलोचना कर रहे हैं। अयोध्या की जनता में यह आवाज उठने लगती है कि यदि प्रजा पर कोई संकट आता है तो वह राजा के दोष के कारण आता है । चारों ओर यह शोर मच गया कि अब राम राज्य भी अकलंक नहीं रहा । जो यह कमल के समान था, अब इसमें कीचड़ सन गया है । राजा राम से अवश्य कुछ पाप-कार्य हुआ है, जिसके कारण प्रजा संतापित हो रही है-

'राम राज नहीं रहा अकलंक
इस कमल में भी सना है पंक
हुआ राजा से कहीं कुछ पाप
क्यों प्रजा पर छा रहा संताप ।" 8

जनता में यह बात उठती है कि राजा तो अपने स्वार्थ में डूबा हुआ पापी है । प्रजा राजा पर आरोप लगाती है वह स्वार्थी और पापी है, भ्रष्टाचारी है ।

राम शूद्र-मुनि का वध करने के लिए पुष्पक यान में बैठकर जाता है । राम का पुष्पक यान उतरते ही वन-वासी उनको घेर लेते हैं। जड चेतन सभी उनका स्वागत करते हैं। वन देवता के प्रश्नों में कवि राम के चरित्र और उनकी योजनाओं पर आधुनिक संदर्भ में प्रश्नचिह्न लगा देता है । वनदेवता राम का स्वागत और स्तवन करने के पश्चात अपने देश ,दण्डाकरण्य की समस्याएँ और यहाँ के लोगों की दयनीय स्थिति राम के सामने रखती है । वन - देवता का कथन वर्तमान संदर्भ में है। अनेक योजनाएँ कागजों पर की जाती हैं परंतु वे आयोजनों तक ही सीमित रह जाती हैं। वे जनता तक पहुँचकर उनका कल्याण नहीं करती । राजा के स्वार्थी और भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति पर व्यंग्य करते हुए वनदेवता अयोध्यापति राम से कहती है --

'सुना
फैली है तुम्हारी
योजनों तक योजनाएँ
पर अगर
सीमित रही
आयोजनों तक योजनाएँ
यदि पहुँच पायी नहीं
भूखे जनों तक योजनाएँ
पर्वतों,नदियों, पठारों
निर्जनों तक योजनाएँ " 9

राज्य के कल्याण के लिए बहुत सी योजनाएँ बनाई जाती हैं। परंतु ये योजनाएँ यदि आयोजनाओं तक ही सीमित रही और कार्यान्वयन रुप में जनता के सामने न आयी और उनका प्रसार भूखे जनों तक न हो पाया,तथा नदियों,पर्वतों, पठारों और निर्जनों तक न फैली तो इन से जनता को कुछ भी

लाभ न होगा ।

यहाँ कवि का मंतव्य है कि हमारे प्रजातंत्र की पंचवार्षिक योजनाओं की दुर्दशा का अंकन । आज हमारे देश में पंचवर्षीय योजनाओं का आयोजन किया जाता है । इसके साथ दीन-दलित लोगों के कल्याण के लिए अनेक योजनाएँ हैं । जैसे - संजय गांधी निराधार योजना, इंदिरा गांधी आवास योजना, दरिद्ररेखा के नीचे आनेवाले लोगों की योजना आदि । ये योजनाएँ दुर्बल तथा गरीब लोगों के कल्याण के लिए हैं, परंतु उनका प्रत्यक्ष लाभ इन लोगों को नहीं मिलता । इस व्यवस्था के प्रति कवि ने यहाँ संकेत किया है ।

राजा की प्रवृत्ति स्वार्थी होने के कारण निरक्षर और पिछड़े लोगों को अनेक प्रकार की घोर यातनाएं सहनी पडती हैं । वनदेवता के माध्यम से कवि ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। वन के विवश और पिछड़े हुए लोग कब तक यातनाएँ सहन करते रहेंगे । यहाँ के निवासी जो अधमरे हो रहे हैं, वे कहाँ तक संतोष धारण करें । राम के वन -रक्षक इनके साथ पशु-तुल्य व्यवहार क्यों कर रहे हैं ? यह स्पष्ट करते हुए कवि लिखते हैं --

" ये निरक्षर वन्य पिछड़े लोग
सहते रहे कब तक यातनाएँ
अधमरे ये कहाँ तक
संतोष को खाएँ चबाएँ ।"[10]

इस प्रकार कवि ने भारत की निम्नलिखित स्थितीयों को स्पष्ट किया है --

× भारत की आज की साक्षरता ।

× गरीबी ।

× आदिवासी लोगों की स्थिती ।

इन निरक्षर तथा आदिवासीयों को भी अपनत्व का साधन मिलना चाहिए । इन को धन चाहे मिले, अथवा न मिले परंतु जलाने को ईंधन तो मिलना ही चाहिए । ये लोग कब तक चने चबा कर हाथ चाटते रहेंगे । अर्थात् कब तक कष्ट भोगते रहेंगे और अपना पेट काटकर मौन बने रहेंगे ।

ये मेहनत का कोई काम करते हुए लज्जा का अनुभव नहीं करते । इन्हें पहनने के लिए कपडे भी नहीं मिलते । इन लोगों की स्थिती स्पष्ट करते हुए कवि लिखते हैं --

ये बुरी करतूत में कम नहीं
हैं जहाँ झख मारते,मरते वहीं
मद पिये, भँवरे बने गुँजारते
भूल जाते , जीतते कब हारते
यदि इन्हें कोई चढा दे सान पर
खेल जाय तुरंत अपनी जान पर "11

ये वन के निवासी बहुत से बुरे काम भी करते हैं । ये झख मारकर , बुरे कामों में फँसे रहते हैं। वे मदिरा पान कर भँवरे बने हुए गुंजार करते हैं । वे हार - जीत को भी भूल जाते हैं । यदि इनको को कोई बढावा दें, तो यें जान पर भी खेल जाते हैं ।

कवि ने यहाँ दीन-दलित तथा आदिवासी लोगों का वास्तव चित्र उपस्थित किया है। राजा स्वार्थी ,भ्रष्टचारी तथा पापी है । राजा की इस स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण आज गरीब गरीब ही रहते हैं और अमीर अधिक धन कमाकर अमीर बन जा रहे हैं । राजनीतिक व्यवस्था जनता से विमुख होने के कारण अनेक योजनाओं का लाभ पिछड़े वर्ग के लोगों तक पहुँच नहीं सकता । इसलिए आज समाज में ऊँच - नीच तथा अमीर - गरीब की विषमता की खाई बढती जा रही है।

इ. राजनीतिज्ञों का पतन -

शम्बूक वध से पूर्व राम और शम्बूक में लंबा संवाद और तर्क वितर्क चलता हैं । इस संवाद में शम्बूक राम के लोक - नायकत्व पर प्रश्नचिह्न लगा देता है । वास्तव में किसी आंदोलन था क्रांति को संचालित करने के लिए एक ऐसे नेता की आवश्यकता होती है,जिस नेता

संपूर्ण जनता पर प्रभाव हो, वही लोकनायक बन सकता है । परंतु शम्बूक की दृष्टि से राम सच्चा लोकनायक नहीं है । इसके साथ ही नेता में सत्चरित्रता, बुद्धिमत्ता, सहृदयता,वर्तमान को देखने समझने और वर्तमान की समस्याओं का समाधान खोज सकने की योग्यता इत्यादि गुण होने चाहिए ।

लोक-नायक लोगों का कल्याण करने वाला होना चाहिए । लोकनायक के गुणों को स्पष्ट करते हुए डॉ. विजयवर्गीय लिखते हैं -

" उसका धर्म लोक सेवा हो, उसका वचन कर्मानुसारी हो, लोकसंग्रह में उसकी प्रवृत्ति और वृत्ति सदा अविचल रुप में बनी रहे,उसका मन पर्वत - सा ऊँचा हो, उसका लक्ष्य ध्रुव के समान अटल हो और उसका जीवन सूर्य के समान नियमित होना चाहिए । उसका -मुखमंडल तेज, हास्य, आनंद, सरलता, मित्रता करुणा, प्रेम से युक्त हो ,जिस समाज, देश या राष्ट्र में ऐसा जननायक हो, उसमें समस्त सुख होंगे वह आदर्श का विधायक तथा विश्ववंद्य होगा । " [12]

शम्बूक राम के लोकनायकत्व पर प्रश्नचिह्न लगा देता है । वह स्पष्ट करता है कि लोकनायक वही हो सकता है, जो संवेदना के मर्म को समझने वाला हो, तथा धर्म - अधर्म तथा कर्म और अकर्म का भेद समझने वाला हो । शम्बूक राम के लोकनायक व्यक्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगाता हुआ कहता है -

" लोकनायक वही जो .
संवेदना का मर्म समझे
धर्म और अधर्म समझे
कर्म और अकर्म समझे
लोकनायक वही
जो विश्वास अर्जित कर सके
प्रत्येक का
और जो सारी प्रजा के
चित्त का प्रतिरुप हो । " [13]

लोकनायक वही है, जो प्रत्येक का विश्वास अर्जित कर सके और सारी प्रजा के चित्र का प्रतिरुप

बन सके । इस प्रकार लोकनायक तथा नेताओं के गुणों का विवेचन किया है । परंतु शम्बूक के मतानुसार लोकनायक राम में इन गुणों का अभाव है ।

शम्बूक का उपर्युक्त कथन वर्तमान संदर्भ में भी सही लगता है। राम की तरह आज के राजनीतिज्ञ तथा नेता लोगों का पतन हुआ है । आज राजनीतिज्ञ सामाजिक व्यवस्था में उच्च स्थान पर बैठे हैं । उनके आचरण में स्वार्थपरक मनोवृत्ति दिखाई देती है । आज कुछ नेताओं द्वारा निम्न स्तर के लोगों पर अन्याय किया जाता है, उनकी आवाज कुचली जाती है । जैसे राम के द्वारा बलात शम्बूक की आवाज दबायी है । इससे यह स्पष्ट है कि गुप्तजी इस काव्य के माध्यम से समकालीन संदर्भों एवं युगिन परिवेश को अभिव्यक्ति देना चाहते हैं । उन्होंने इस कृति में सत्तायी अव्यवस्था के प्रति प्रश्नचिह्न लगाया है।-इस संदर्भ में डॉ. कृष्णचंद्र जी का मत दृष्टव्य है -

" जिस प्रकार 'शम्बूक' के माध्यम से भारतीय जनतांत्रिक व्यवस्था के द्वारा दबायी जानेवाली आवाज को उठाया है, वही शम्बूक की मौलिक पहचान है । " [14]

जब राम दण्डकारण्य में जाने के लिए निकलते हैं तब वनदेवता के माध्यम से कवि ने राजा के कर्तव्यों के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये हैं -

"राम! अब तुम नगरवासी हो
चक्रवर्ती हो, सुपासी हो
विजन की करना नहीं अवमानता
विजन को अपना स्वजन ही जानना ।" [15]

वनदेवता राम के सामने दण्डकारण्य की दयनीय स्थिति का वर्णन करती है । इन वनवासियों के देश में वनवासी नंगे शरीर रहते हैं ।इस सनुसान वन के निवासी अपने मन में मगन रहते हैं । यह सुख-सुपासों और अभावों से भरा देश है । राम नगरवासी, चक्रवर्ती और सुख में रहनेवाले हैं इसीलिए उन्होंने इस विजन का अपमान नहीं करना चाहिए और इन्हें अपना ही मानना चाहिए ।

राम सत्ताधारी है । वे सत्ता के मद में पूर्णत : लिप्त हो चुके हैं । वनदेवता का कथन भी वह नहीं सुनता है । उलटे उसका क्रोध बढ़ जाता है । उसके भीतर छिपी क्रोधाग्नि दावाग्नि का रुप धारण कर लेती है ।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि आज प्रजातंत्र भारत में भी नेता लोगों का

अधःपतन हुआ है । आज के नेताओं में सद्चारित्र्य,बुद्धिमत्ता,सहृदयता आदि गुणों का अभाव है सभी भूमि पुत्र हैं ।फिर भी मानव -मानव के बीच असमानता का व्यवहार किया जाता है । आज नेताओं में प्रजाहित,जनहित की भावना नहीं है । इसीप्रकार आज राजनीतिज्ञों का अधःपतन हुआ है।

ई.साम्यवाद बनाम राजनीति -

आधुनिक काल के कुछ कवियों ने भावी अर्थव्यवस्था के संबंध में समता -स्थापना तक अपने विचार व्यक्त किये हैं। कुछ कवियों ने साम्यवाद की ओर संकेत मात्र किया है । कई कवियों का ऐसा कहना है कि साम्यवाद से मानव का कल्याण हो सकता है, यह एक ऐसा लोक है जिसमें दुःख तो स्वप्नवत हो जाते हैं ।

साम्यवादी व्यवस्था का स्वरुप भारत में कैसा भी हो, इसका एक चित्र स्पष्ट करते हुए निरालजी ने लिखा है कि "अब अमीरों की हवेली किसानों की पाठशाला होगी,धोबी,पासी, चमार और तेली अंधेरे का ताला खोलेंगे और सब मिलकर एक ही पाठ पढेंगे । आँख दिखाने वाले सेठजी की बैठक में अब किसानों का बैंक खुलेगा । सारी संपत्ति देश की होगी और जनता जातीय वेश की होगी । "[16]

आज समाज में सिर्फ सत्ता प्राप्ति के लिए साम्यवाद का प्रचार किया जाता है, परंतु वास्तव यह है कि साम्यवादी व्यवस्था निर्माण नहीं हो सकती । राम ने जीवमात्र के कल्याण का व्रत लिया था, परंतु उन्होंने यह व्रत नहीं निभाया । तब शम्बूक उसे शूद्रघाती बताकर उसकी राजनीति पर करारा व्यंग करता है -

"कौन शासक भूल अपनी मानता
सदा अपराधी प्रजा को जानता
राम तुम राजा बने किस हेतु हो ?
व्यष्टि और समष्टि मन में सेतु हो?[17]

शम्बूक राम से यह प्रश्न करता है कि क्या तुम राजा बनकर व्यक्ति और समाज के बीच सेतु बन सके ?क्या यही तुम्हारा समताबोध है कि तुम क्रोध कर के शूद्रघाती बनो? शम्बूक से शूद्रघाती संबोधन सुनकर राम का क्रोध भडक उठता है ।

शम्बूक राम से कहता है कि ये वन के विवश और पिछड़े हुए लोग कबतक यातनाएँ सहन करते रहेंगे । यहाँ के निवासी जो अधमरे हो रहे हैं,वे कब संतोष धारण करेंगे ? इनको मानवता का व्यवहार क्यों प्राप्त नहीं होता, यह स्पष्ट करता हुआ शम्बूक शासन व्यवस्था पर चोट करता है -

"क्यों करे वनपाल
पशु की भाँति अत्याचार
क्यों न हो मानव सा
इन्हें मिलता रहे व्यवहार "[18]

राम ने चौदह वर्षोंतक दण्डकारण्य में वनवास के दिन व्यतित किये हैं । अतः वनदेवता राम से कहती है कि राम वनवासियों की स्थिती से अपरिचित नहीं है । उसी समय राम सत्ताहीन थे किन्तु आज अयोध्यापति बने हैं । अयोध्यापति बनते ही राम का वनवासियों की तरफ देखने का दृष्टिकोण बदल गया । यह स्पष्ट करते हुए वनदेवता कहती है -

" दण्ड देने हेतु
दण्डक में यहाँ तुम आ गये
एक क्षण सोचो
कहाँ पर थे, कहाँ तुम आ गये ।"[19]

ऐसे ही आज प्रजातंत्र भारत में भी जब तक सत्ता नहीं होती तब तक नेता लोग शूद्र लोगों पर दया दिखाते हैं । साम्यवाद की बातें करते हैं । साम्यवाद के नाम पर, धन के बल पर जैसे ही उन्हें सत्ता मिलतीहै, तब वे शूद्र तथा पिछड़े हुए लोगों को भूल जाते हैं । राम की राजनीति भी इसी प्रकार की अन्यायी है । इसलिए शम्बूक राम की व्यवस्था को बार बार धिक्कारता है । शम्बूक राम के न्याय को स्वार्थ कहता है ।

उनके न्याय को वध का आधार मात्र कहता है । राम ने ताडका, मारीच,खार, दूषण, सुबाहु, कबन्ध,बालि,त्रिशिरा आदि का वध किया । इसलिए शम्बूक राम के न्याय का आधार एकमात्र वध मानता है । जो विरोध में है, उसका राम ने वध किया है । यह स्पष्ट करते हुए शम्बूक राम से कहता है -

"जो तुम्हारे पक्ष में हो,कुछ करे अन्याय,
तुम रहोगे मौन, भूलोगे समस्त उपाय
शासकों को सदा यह सुविधा रही है राम ।
प्रजा को सदा यह दुविधा रही है राम।"[20]

शम्बूक के इस कथन में आज के शासकों पर करारा प्रहार है। शम्बूक राम से कहता है कि तुम्हारे पक्ष का चाहे जो अन्याय करें, उस पर तुम मौन ही रहोगे और उसके सारे अन्याय और कुकर्म भूल जाओगे । हे राम। शासकों ने अपने लिए सदैव ही यह सुविधा रखी कि वे अपने पक्ष वालों के पाप कर्मों को न देखें और विपक्षियों के वध को मर्यादा की व्यवस्था का नाम दें । इस कारण प्रजा को सदैव दुविधा ही बनी रहती है । यह, तुम्हारा घृणित व्यापार कब तक चलता रहेगा ?

कवि शम्बूक के माध्यम से यह स्पष्ट कर रहे हैं कि शासन में जो सत्तापक्ष में होते हैं, वे चाहे जनता पर अन्याय करे तो भी शासक उस समय मौन धारण करते हैं। शासकीय उच्च पदस्त और उनके अधिकारी सामान्य जनता पर अन्याय, अत्याचार करते हैं, उनका शोषण करते हैं । फिर भी राजनीतिक लोग उनकी ओर ध्यान नहीं देते ।

भारतीय प्रजातंत्र में स्वतंत्रता के बाद भारत में केंद्रीय और राज्य मंत्रियोंके प्रति जनता की श्रद्धा बनी रही किन्तु ज्यों ज्यों समय निकलता गया और जनता की अपेक्षाएँ पूर्ण नहीं हुई त्यों त्यों मंत्रियों पर आलोचना और व्यंग्यो की बौछार होने लगी । क्योंकि आज कुछ मंत्री लोग भी समानता के नाम पर जनता पर अन्याय कर रहे हैं।

ड पतित राजनीति के विरोध में विद्रोह -

भारत में सन 1947 से स्वतंत्रता के साथ प्रजातंत्र की स्थापना हुई । भारत की स्वतंत्रता के पश्चात एशिया के अन्य देश भी स्वतंत्र हुए । उनमें प्रजातंत्र की स्थापना हुई । प्रजातंत्र के कई दोषों के बावजूद यह राज्य प्रणाली अधिक मान्य है । लोकतंत्र की परिभाषाएँ भी विचारकों ने अपने अपने ढंग से की हैं । मैजिनी के अनुसार "लोकतंत्र सर्वोत्तम तथा सब से बुद्धिमान नेतृत्व के अधीन सबके द्वारा सबकी प्रगति है ।"[21] तो जेम्स ब्राइस के शब्दों में लोकतंत्र " शासन का वह रुप है जिसमें कि योग्य नागरिकों का बहुमत शासन करता

है, योग्य नागरिकों से अभिप्राय है जनता के अधिकांश से "[22] आधुनिक कवियोंने भी जनतंत्र को बहुमत का प्रजा के लिए शासन माना है । परंतु आज के जनतांत्रिक राज्य में निम्न स्तर के लोगों पर अत्याचार किया जाता है ।

प्रस्तुत रचना में राम शोषक ,रुढिवादी सभ्यता,शासक तथा अहंकार का प्रतीक है । एक ब्राह्मण शिखा खोले हुए बाहें उठाकर राम को अभिशाप दे रहा है । उसके युवा पुत्र को नाग ने डस लिया । वह इसे राजा का पाप कहते है । मंत्री परिषद इस समस्या पर विचार करने के लिए संघटित होती है । राज-वैद्य विष दंश के उपचार में लग जाते हैं । वैद्य का उपचार, श्रम व्यर्थ जाता है । गुरु वशिष्ठ बुलाये जाते हैं। गुरु वशिष्ठ के कुटी से निकलने के पश्चात नारद मार्ग में मिल जाते हैं। वे ब्राह्मण -पुत्र की समस्या का समाधान बताते हुए सलाह देते हैं -

"कर रहा तप शूद्र कोई
अधोमुख दण्डक गहन में
× × ×
विपिन जाकर
शूद्र -मुनि-वध
जब करेंगे राम,
विप्र सुत, होगा तभी जीवित,
सहज परिणाम । "[23]

गुरु की मंत्रना अथवा नारद की सलाह पाकर राम अकेले ही शूद्र -मुनि को खोजकर उसके वध का संकल्प करते हैं। इस प्रकार विप्र - बालक के मर जाने का कारण शूद्र तप माना जाता है । इस बात पर राम विश्वास रखता है और शम्बूक का वध करता है -

"अंततः
नृप राम ने
लाचार हो,
कर दिया खड्ग- प्रहार
कट गया
शम्बूक का सिर "[24]

यह सब रुढ व्यवस्था के रक्षार्थ होता है । यहाँ राम परंपरागत रुढियों से जकडे हैं । इसलिए

राम विवश होकर शम्बूक पर खड्ग प्रहार करके उसका शीश काट देते हैं।

कवि ने यहाँ राम के माध्यम से वर्तमान सत्ता पक्ष के निरंकुश तंत्र एवं तज्जन्य भेदभावपूर्ण स्थितियों पर व्यंग्य किया है । शम्बूक का छिन्न शीश जो कुछ कहता है, उसमें शम्बूक की प्रखर तेजस्विता राम की महान गौरवमयी राजसी चेतना को आर-पार बेध जाती है । शम्बूक की तर्कशीलता के सामने राम का ब्रह्मत्व एवं उनकी विराटता अपनी अर्थवत्ता खो देती है राम राज्य की परम जन कल्याणात्मक धारणा को शम्बूक के तर्क नितांत विडंबना पूर्ण बना देते हैं ।

शम्बूक का छिन्न शीश राम को संबोधित करता हुआ कहता है कि जहाँ सभी मनुष्य अपने अच्छे बुरे कार्यों का परिणाम ही भोगते हैं फिर यह किस प्रकार हो सकता है कि एक शुभ कर्म दूसरे के मार्ग में बाधक बने । शम्बूक मात्र इस कल्पना का प्रखरता से विरोध करता है -

"शूद्र- तप से
विप्र-बालक मर गया
 यह कल्पना की बात
शूद्र वध से
विप्र - बालक जी उठा ।
 यह जल्पना की बात । "25

शम्बूक का छिन्न शीश राम को चुनौती देता हुआ शूद्र-तप से विप्र -सुत के मरने और शूद्र-वध से विप्र -सुत के मरने और शूद्र-वध से विप्र-सुत के जीवित होने की मान्यता को मृत परंपरा बतलाता है । हिंसा ही मनुष्य का न्याय नहीं है । मानव न्याय के अहिंसा तथा अन्य उपाय भी हैं ।

शम्बूक शूद्र- तप को उचित सिद्ध करता हुआ मनुष्य मात्र के उत्थान की बात कहता है । शम्बूक की ऐसी धारणा है -

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

"शूद्र का तप
शूद्र को फलवान हो
साधना जो भी करे
बलवान हो ।[26]

शूद्र जो तपस्या करे,उसे उसका फल मिले । जो भी साधना करे वह साधना के प्रभाव से शक्ति सपन्न बने । भाव यह है कि चाहे मनुष्य किसी भी जाति का हो, उसे उसके अच्छे कर्म का फल मिलना ही चाहिए । सभी मनुष्य अच्छे कर्म करते हुए जीवन साधना में तपकर स्वर्ण के समान कान्तिवान बन सकते हैं।

शम्बूक का छिन्न शीश राम को ललकारते हुए उनकी वध-नीति को कायरता कहता है और उनकी राजनीति पर प्रश्नचिह्न लगा देता है । वह कहता है - हे राम । अपनी तेज धार वाली तलवार से, जो रक्तस्नान करती रही है,मेरे संकल्प का भी सिर काट दो। यदि तुम सशक्त और समर्थ हो तो मेरे संकल्प का भी वध कर दो, अन्यथा मेरी इसी बात को मान लो कि तुम्हारी वध-नीति कायर और सब प्रकार से व्यर्थ है । शम्बूक राम को ललकारता हुआ कहता है -

"राम लेकर खड्ग
मुनि-वध को चले
तो क्या हुआ
दबी पशुता ने
प्रखर पंजे बढा
देवत्व के तन को छुआ
किसी की बलि से
किसी की प्राण रक्षा?
अंधता से युक्त
यह आदिम व्यवस्था ।"[27]

शम्बूक राम की व्यवस्था पर प्रहार करते हुए कहता है कि यह तुम्हारी आदिम व्यवस्था है।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

किसी के वध से किसी के प्राण की रक्षा हो, अर्थात वध तो मेरा हुआ और प्राण रक्षा विप्र-पुत्र की हुई । इस व्यवस्था पर कोई व्यक्ति विश्वास क्यों करे और इनके प्रति आस्था कौन व्यक्त करे? इसका परिणाम तो यही होगा --

"नहीं इससे मनुज का
गौरव बढेगा
विषमता से और भी
रौरव बढेगा । "28

इससे मनुष्य का गौरव नहीं बढेगा । तुम्हारे जातिभेद ने जो विषमता फैला दी है,उससे विद्रोह ही बढेगा ।

सारांश रुप से यह स्पष्ट होता है कि राजनीतिक व्यवस्था निरंकुश होती है। वह न्याय अन्याय का विचार न करते हुए निम्न स्तर के सामान्य लोगों पर अपना अधिकार जमाती है।शम्बूक व्यवस्थायी कुचक्रों के विरोध में आवाज उठाता है । वह व्यक्ति स्वातंत्र्य का समर्थन करता है । शम्बूक सत्ता पक्ष को उसकी अंधी एवं आराजकतावादी नीतियों के प्रति सचेत करता है। इसप्रकार भारतीय गणतंत्रव्यवस्था द्वारा अपनायी गई दमनभरी राजनीति के विरुद्ध 'शम्बूक' प्रश्नचिह्न है ।

ऊ युद्ध और राजनीति-

युद्ध और राजनीति का घनिष्ट संबंध होता है । युद्धों का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। परंतु परमाणु अस्त्र-शस्त्रों के युग में युद्ध के प्रश्न ने राजानीतिज्ञ, वैज्ञानिक तथा नीतिशास्त्रियों की चिंता बढा दी है। आधुनिक कवियों को भी, अनेकों आधुनिक युग के प्रश्नों में सर्वाधिक इस प्रश्न ने विचार के लिए प्रेरित किया है ।

कवियों ने युद्ध के कारणों पर प्रकाश डालते हुए युद्ध के पक्ष और विपक्ष दोनों के संबंध में विचार व्यक्त किये हैं। युद्ध एक सामुहिक क्रिया होते हुए भी उसका मूल एक प्रवृत्ति के रुप में व्यक्ति के मानस में ही विद्यमान होता है ।आधुनिक कवियों के विचार से

मध्ययुगीन युद्ध राजा और सामंत वर्ग के तथा बाद के युद्ध पूंजीवादियों के स्वार्थ की अठखेलियों के निष्ठुर रुप हैं । ऐसे ही युद्ध के अनेक कारणों पर आधुनिक कवियों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं ।

आलोच्य काव्य में भी युद्ध के कुछ कारणों के संकेत दिये हैं। उसके साथ ही युद्धों का परिणाम भीषण होता है इसलिए उसे नकार भी दिया है । 'शम्बूक' में वर्तमान अशान्तपूर्ण युद्धजनक स्थितियों पर प्रहार किया है। जैसे कि शम्बूक युद्ध का कारण सत्ता पक्षएवं उच्च वर्ग की लोलुपता और उनका स्वार्थ मानता है। यथा -

"हरण सीता का तुम्हारा व्यक्तिगत कारण
मरण रावण का उसी अपकर्म का वारण
उसी फल की सिद्धि को बाँधा गया था सेतु
युध्द वानर - राक्षसों का उसी फल के हेतु
उस समस्त विपत्ति के कारण तुम्हीं थे राम।
हुआ सब कुछ देवगण के स्वार्थ के परिणाम ।"[29]

युद्ध की भावना राजा के मन में होती है। सामान्य जनता तथा समुदाय नहीं लडना चाहता । युद्ध की विषैली लपटें व्यक्तियों की साँस से ही फैलती हैं। स्वार्थमय राग-द्वेष से युद्ध होते हैं। युद्ध के कारण को स्पष्ट करते हुए कवि ने शम्बूक के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये हैं। शम्बूक कहता है - सीता का हरण तुम्हारा व्यक्तिगत कारण था और उसी व्यक्तिगत अपकर्म के कारण रावण का वध हुआ । अपनी उसी स्वार्थ- सिद्धि के लिए तुमने समुद्र को बाँधा और उसी फल के लिए वानरों और राक्षसों का युद्ध हुआ । इस युद्धजनित सारी विपत्ति का तुम स्वयं ही कारण थे और यह सब कुछ देवताओं के स्वार्थ के परिणम स्वरुप हुआ ।

इस प्रकार युद्ध के कारणों पर प्रकाश डालते हुए राजा की स्वार्थी वृत्ति इसमें प्रमुख है। इसप्रकार शम्बूक वर्तमान अशांतपूर्ण युद्धजनक स्थितियों पर प्रहार करता है। युद्ध का दूसरा कारण है सत्ता पक्ष एवं उच्च वर्ग की लोलुपता और असभ्यता । शम्बूक स्पष्ट करता है -

"क्या कभी उन लोलुपों पर भी किया है क्रोध?
क्या कभी उन देवताओं को दिया उद्बोध ?
या मुझी को आज देने आ गये उपदेश
क्या नहीं होता तुम्हारे चित्त को कुछ क्लेश ?"30

देवताओं के लोलुपता के कारण युद्ध हुए हैं। शम्बूक राम से पूछता है कि क्या तुमने उन लोलुप देवताओं पर भी क्रोध किया है? उनको भी कभी ज्ञान का उपदेश दिया है या आज मुझे ही उपदेश देने के लिए आ गये । ऐसा करते हुए तुम्हारे चित्त को कुछ भी क्लेश नहीं होता ।

सत्ता पक्ष तथा उच्च वर्ग के मन से ही युद्ध की भावना उपजती है । देश में अशांतता तथा युद्धजन्य स्थिति देश के नेता लोगों के कारण ही होती है। इसलिए शम्बूक उच्च वर्ग में केंद्रीत अर्थप्रधान व्यवस्था को अराजकता का मूलभूत कारण मानते हुए कहता है -

"राजसी मन पर तुम्हारे
स्वर्ण का ही राज्य
भूमि पुत्रों का तुम्हें
अधिकार अब भी त्याज्य । "31

राम शम्बूक के सामने एक पत्नीव्रत का आदर्श प्रस्तुत करता है तब शम्बूक कहता है कि आदर्श पालक राम तुम और तुम्हारा आदर्श धन्य है । परंतु यह तो बतलाओ कि तुमने अपने व्यक्तिगत उत्कर्ष के लिए ही क्या अपनी पत्नी का त्याग नहीं किया । यह कैसी विड़ंबना है कि यज्ञ की वेदी पर सीता का स्थान रिक्त रहेगा और वह आँसू बहाती हुई वन में पडी रहेगी । परंतु इस प्रकार यज्ञ में भूमिजा सीता की कमी की पूर्ति किस प्रकार हो पायेगी । तुम मिट्टी के स्थान पर उसकी सोने की मूर्ति बनाओगे क्योंकि तुम्हारे मन पर स्वर्ण ही छाया हुआ है और भूमि तथा भूमि-पुत्रों से तुम्हारा लगाव नहीं है ।

शम्बूक का ऐसा तर्क है कि राम ने सम्मान के साथ प्रतिपक्ष की बात कभी नहीं सुनी। उसने सीता की बात सुने बिना उसको निस्कासन किया और अपने पक्ष को सबल बनाने के लिए विपक्षी का वध किया । न्यायालय भी सदा राम (सत्ता पक्ष) का ही मत स्वीकार करता है। राम की नीति यह है कि उसके व्यक्तिगत निर्णय को सभी मान लें। रावण और बालि ने उसका व्यक्तिगत निर्णय स्वीकार नहीं किया,इसलिए उसने उनका वध किया । यही व्यवहार उन्होंने शम्बूक के साथ किया है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि राजा तथा सत्ता पक्ष में संपत्ति के प्रति लगाव होता है । सत्ता,संपत्ति प्राप्त करने के लिए युद्ध जैसे मार्गों का अनुसरण किया जाता है । आज आधुनिक काल में विज्ञान की प्रगति हुई है। यह बुद्धिवाद का युग है । इसलिए अनेक नवीन तंत्र,अस्त्र-शस्त्र,तथा साधनों का निर्माण हुआ है । आज तक दो विश्व युद्ध हुये, जिनका भयंकर परिणाम दुनिया को भुगतना पडा है । आज अणुबम और एटम बम जैसी विध्वंसक सामुग्री बनाई है । आज विश्व तिसरे विश्वयुद्ध की कगार पर खड़ा है क्योंकि आज विश्व में बुद्धिवाद का प्रभाव है । यह स्पष्ट करते हुए शम्बूक कहता है -

"बुद्धि के पीछे छिपे
नख दन्त जो
घात का उनके
किसी विधि अंत हो । "[32]

आज बुद्धिवाद के पीछे युद्ध और हिंसा के जो नख-दंत छिपे हुऐ हैं, उनके आघात का भय इस संसार से नष्ट होना चाहिए ।

शम्बूक समाजवादी चेतना का संवाहक है । उसकी ऐसी धारण है कि स्वाभिमानी व्यक्ति ही इन्सान है । वह स्वाभिमान को मानव जीवन का आधार मानता है । सेवा ही यदि श्रेष्ठ है तो सभी जन उसे स्वीकार करें और स्वार्थ को सभी छोड दे । सभी में एकात्मता की भावना निर्माण होनी चाहिए । यह स्पष्ट करते हुए वह कहता है --

" एक का क्यों दुसरा
शोषण करे ?
कर सके तो --
हित करे,पोषण करे । "[32]

एक दूसरे का शोषण न करके यदि हो सके तो वह दूसरें का हित करे । इस प्रकार सभी में एकात्मकता व्याप्त होनी चाहिए । तभी समाज में शांति और समृद्धि निर्माण हो सकती है ।

सारांश रुपमें यह कहा जा सकता है कि युद्ध के जो कारण है उसमें इस काव्य में राजनीतिज्ञों की स्वार्थमयता, लोलुपता, संपत्ति के प्रति लगाव और बुद्धिवाद आदि का विवेचन

किया है । उसके साथ ही युद्धोंके जो दुष्परिणाम होते हैं उनकी ओर भी संकेत किया है । राजनीतिक व्यवस्था कल्याणकारी होनी चाहिए । शोषणविरहित,हितकारक शासनसंस्था ही समाज में एकात्मता और मानवी जीवन में समृद्धि निर्माण कर सकती है ।

ए लोकतांत्रिक मूल्य और राजनीति -

शम्बूक को लोकतांत्रिक मूल्यों में विश्वास है । भारत में स्वतंत्रता के पश्चात लोकतंत्र की स्थापना हुअी है । भारत की स्वतंत्रता के पश्चात एशिया के अन्य देश भी स्वतंत्र हुए और उनमें से अनेक में प्रजातंत्र की स्थापना हुई । लोकतंत्र के कतिपय दोषों के बावजूद यह राज्य प्रणाली अधिक मान्य रही है । लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में न्याय, स्वातंत्र्य, समता और बंधुता ये प्रमुख तत्व होते हैं । इन लोकतांत्रिक मूल्यों का विवेचन प्रस्तुत काव्य में स्थान -स्थान पर हुआ है ।

राम शम्बूक के तर्कों के सामने निरुत्तर हो जाता है । तब राम 'प्रजा का परितोष' राजा का दायित्व कहकर अपने पक्ष का औचित्य बतलाता है । राम स्पष्ट करता है कि जब एक का हित दूसरे का अहित बन जाता है, तो इसे दूर कर देना राजा का श्रेष्ठ न्याय होता है । जैसे -

"एक का हित
दूसरे का जब अहित बन जाय
दूर कर देना उसे
है श्रेष्ठ राज-न्याय । "[34]

प्रजानुरंजन और उसका परितोष करना राजा का प्रमुख दायित्व होता है । यह राजा का सहज कर्तव्य होता है । राम आगे स्पष्ट करता है कि प्रजा के लिए मैंने सीता का त्याग किया । तब शम्बूक 'प्रजा परितोष' की बात को नकारता हुआ उसके शासन को बधिक शासन कहता है क्यों-कि सीता भी तुम्हारी प्रजा ही थी । उनके साथ तुमने 'प्रजा परितोष' का व्यवहार क्यों नहीं किया ? यथा -

"प्रजा होने का उन्हें भी
क्या न था अधिकार ?
ली परीक्षा अग्नि की
फिर भी किया अस्वीकार

कब मिला अवसर उन्हें
जो कर सकें प्रतिवाद
दिया निर्वासन उन्हें
छल से बया सविषाद । "35

राम ने सीता को छल से निर्वासन दिया और उसे विषाद की गर्त में धकेल दिया । उसने भूमि-पुत्री के अंतःकरण को कभी पहचाना नहीं । इसलिए शम्बूक राम के शासन को बधिक शासन कह कर उस पर करारा व्यंग्य करता है ।

कवि इस कृति के माध्यम से यह संदेश देता है कि यदि प्रेम,करुणा,स्नेह और समता भाव से सामाजिक जीवन का संचालन हो तो समाज की समस्याओं का समाधान हो सकता है । समतावादी दृष्टि आज के युग की सब से बड़ी आवश्यकता है । यही बात स्पष्ट करते हुए शम्बूक कहता है --

सहज समता हो सभी में व्याप्त
व्यवस्था के हेतु यह पर्याप्त
भूमि पर फिर भूमि की संतान
करे शासन,श्रम बने श्रीमान " 36

तुम्हारी व्यवस्था से समाज में समता व्याप्त हो जाय । पृथ्वी के ऊपर पृथ्वी का पुत्र ही शासन करें और श्रम करनेवाला ही श्रीमान बने ।नया मनुष्य पृथ्वी पर स्वावलंबी होकर अपनी ही शक्ति से गतिमान रहे । शम्बूक के इस कथन में वर्तमान शासकों के लिए संदेश है । वह नयी पीढी की नवचेतना जागृति को महत्वपूर्ण मानता है ।

"नयी पीढ़ी को प्रणत हो राम ।
फिर सिधारो निज अयोध्या धाम
छोड़ दो यह व्योमचारी यान
पुनः पृथ्वी का करो संधान । "37

शम्बूक राम से कहता है कि अब तुम नई पिढ़ी के सामने प्रणत होकर अपने अयोध्या धाम सिधारो। इस आकाश में उडनेवाले पुष्पक विमान को छोड़ दो और पृथ्वी की पुनः खोज करो । जहाँ भी तुम को हल की रेखा दिखाई पड़े, उसीमें तुम क्लांत सीता को देखो और अपने नेत्रों के खारी अश्रुओं की दो बूँदे उसमें डाल दो । इससे तुम्हारी पीड़ा बहुत कम हो जायेगी ।

शम्बूक कर्मशीलता को मानव प्रगति का आधार मानता है, तथा सामाजिक जीवन में व्याप्त स्वार्थों को संघर्ष का एक मात्र साधन मानता है ।प्रत्येक अच्छे कार्य से और जो भी साधना करे वह साधना के प्रभाव से शक्तिसंपन्न बनता है । ब्राह्मणों,क्षत्रियों, और वैश्यों के लिए भी कर्म का महत्व है । मनुष्य चाहे किसी भी जाति का हो, उसे उसके अच्छे कर्म का फल मिलना ही चाहिए । सभी मनुष्य अच्छे कर्म करते हुए जीवन साधना में तपकर स्वर्ण के समान कांतिवान बन सकते हैं । शम्बूक को विश्वास है कि -

"मनुज पशुता भाव से, -
ऊपर उठे
ज्योति के प्राचीर सा
भूपर उठे । "38

मनुष्य पशुत्व की भावना से ऊपर उठकर पृथ्वी के ऊपर ज्योतिर्मयी दीवार की तरह खडा हो जाय । वह ऊर्ध्वता प्राप्त कर अपनी सहज गति से आकाश तक पहुँच जाय । मानसिक संकल्प ही उसका यान बनें ऐसी शम्बूक को आशा है । इसप्रकार वर्तमान काल में व्याप्त वर्ग-वर्ण भेद एवं लोकतांत्रिक मूल्यों की हो रही बलान हत्या की ओर - कवि ने संकेत किया है ।

'शम्बूक ' में प्रजातंत्र के मूल्यों की स्थापना का भी प्रयास किया है । इसमें राजा और प्रजा दोनों के लिए आदर्श निर्धारित किया गया है । शम्बूक राम को लोकनायक न मानकर

उनको मात्र दण्डनायक कहकर उनकी महानता पर प्रश्नचिह्न लगा देता है । तुम अपने को लोक-नायक कहते हो, परंतु लोक-नायक वही हो सकता है, जो संवेदना के मर्म को समझनेवाला हो, तथा धर्म तथा कर्म और अकर्म का भेद समझने वाला हो । वह राजा के गुणों को स्पष्ट करते हुए आगे कहता है --

"लोकनायक वही
जो विश्वास अर्जित कर सके
प्रत्येक का
और जो सारी प्रजा के
चित्त का प्रतिरुप हो । "39

लोकनायक वही है,जो प्रत्येक का विश्वास अर्जित कर सके और सारी प्रजा के चित्त का प्रतिरुप बन सके । वह लोकनायक कदापि नहीं है, जो विधि और अविधि की बात करने से डरे और मात्र दण्डनायक भूप बन जाय । सारे मनुष्य भूमि की संतान हैं । इस भूमि पर किसी विशेष वर्ग का प्रतिनिधि शासन करने का अधिकारी नहीं है । जो पशुता भाव से ऊपर उठकर सारी मानवता को समान दृष्टि से देखता है वही इस धरती पर शासन कर सकता है ।

व्यक्ति की पूजा का आधार उसका श्रम होना चाहिए । उसका उचित धर्म और उचित व्यवहार होना चाहिए । समतावादी-दृष्टि रखने वाला व्यक्ति ही लोकनायक बन सकता है । इसलिए शम्बूक कहता है -

"लोकनायक वही जो
संवेदना का मर्म समझे
धर्म और अधर्म समझे
कर्म और अकर्म समझे ।" 40

समतावादी -दृष्टि आज के युग की सबसे बडी आवश्यकता है । यही कारण है कि शम्बूक अपने युग का प्रतिनिधित्व करता है ।

लोकनायक होने के लिए सेवा उसका धर्म होना चाहिए । उन्होंने दूसरों का शोषण न करके हित करना चाहिए । यदि सेवा श्रेष्ठ है, तो उसका सभी को स्वीकार करना चाहिए और स्वार्थ यदि नेष्ट है तो उसका त्याग करना चाहिए ।
इसलिए शम्बूक कहता है -

"एक का क्यों दूसरा
शोषण करे
कर सके तो ---
हित करे, पोषण करे । "41

इस प्रकार सभी में एकात्मता व्याप्त हो जाय और मन में किसी प्रकार का भेद भाव नहीं रहना चाहिए । शम्बूक को यह मान्य नहीं है, कि कुछ लोग स्वार्थ साधन के हीन कर्म में लगे रहते हैं और सेवा दुसरों का धर्म बतलाते हैं । यथा -

"स्वार्थ - साधन
कुछ जनों का कर्म हो
और सेवा
दूसरों का धर्म हो
यह नहीं स्वीकार्य
यह तो त्याज्य है
राम यह कैसा
तुम्हारा राज्य है। "42

इस प्रकार की स्वार्थी तथा दूसरों का अहित करने वाली शासन -व्यवस्था स्वीकार करने योग्य कभी नहीं हो सकती । ऐसी शासन व्यवस्था तो त्याज्य ही होनी चाहिए ।

प्रस्तुत रचना में मर्यादा पुरुषोत्तम राम रुढ़िवादी सभ्यता एवं व्यवस्था, शोषण एवं शोषक तथा अहंकार का प्रतीक है । वह अपनी व्यवस्था, रुढि परंपरा का पूरा समर्थन करता है ।

A 12009

राम को अपने सुशासन का बड़ा गर्व है । उसकी दृष्टि में उसकी शासन पद्धति परिशुद्ध है । वह एक समर्थ शासक है । वह अपने आदर्श तथा नीति को छोडता नहीं है । वह प्रशासन कला में मानो परिपूर्ण है ।

राम की प्रशासन- नीति में कुछ ऐसी दुर्बलताएँ हैं, जिन्हें शम्बूक तर्कशीलता से उद्घाटित करता है । यहाँ कवि ने शम्बूक के माध्यम से आदर्श प्रशासन - व्यवस्था का विवेचन किया है । उसके साथ ही लोकतांत्रिक मूल्य और आज की राजनीति के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये हैं। लोकतांत्रिक मूल्यों को स्पष्ट करते हुए उन्होंने राजा और प्रजा के कर्तव्य, न्याय, समता, राजा के गुण आदि के संबंध में विवेचन किया है ।

आज के लोकतांत्रिक युग में लोकतांत्रिक मूल्यों की बलात हत्या हो रही है । इसके संबंध में उन्होंने जगह - जगह पर संकेत किये हैं। कवि की ऐसी धारणा है कि आज के युग में समतावादी दृष्टि अत्यंत आवश्यक है । राम कथा के माध्यम से कवि ने आधुनिक राजनीतिक समस्याओं को उठाने का प्रयत्न किया है,इसमें कवि पूर्णत : सफल भी हुए हैं ।

निष्कर्ष -

हिंदी राम-काव्य की परंपरा में 'शम्बूक ' का अपना विशिष्ट स्थान है । राम कथा के माध्याम से आधुनिक समस्याओं का समाधान खोजने वाले हिंदी प्रबंध - काव्य की परंपरा में 'शम्बूक ' एक सशक्त कड़ी है । इस काव्य में 'शम्बूक ' का वैशिष्ट्य इस बात में है कि इसमें राम का चरित्र नवीन परिवेश में प्रस्तुत हुआ है और साथ ही शम्बूक को भी नये रुप में प्रस्तुत किया है । आधुनिक जीवन की विषम स्थितियों में शम्बूक का अपना विशिष्ट महत्त्व है । इस प्रबंध - काव्य की कथा पौराणिक है, तथापि उसमें नवीनता और मौलिकता का समावेश हुआ है ।

प्रस्तुत अध्याय में 'शम्बूक ' खंडकाव्य में वर्णित राजनीतिक समस्याओं का विवेचन किया गया है । इस प्रबंध -काव्य में प्राचीन राम कथा के माध्यम से कवि ने आज के युग की अनेक राजनीतिक समस्याओं को उठाया है और परोक्ष रुप में उन समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत किये हैं । इस काव्य के अंतर्गत जिन राजनीतिक समस्याओं को उठाया है उनमें निम्न

समस्याएँ मुख्य है --

अ. निरंकुश राजसत्ता ।

आ. आम जनता से विमुख राजनीति ।

इ. राजनीतिज्ञों का पतन ।

ई. साम्यवाद बनाम राजनीति ।

उ. पतित राजनीति के विरोध में विद्रोह ।

ऊ. युद्ध और राजनीति ।

ए. लोकतांत्रिक मूल्य और राजनीति ।

जैसे कि शम्बूक कवि की वाणी का वाहक है । उसके माध्यम से कवि ने अपने विचारों को व्यक्त किया है। आज रूढिवादी,निरंकुश राजसत्ता होने कारण आज भी ऐसे अनेक शम्बूक हैं, जिन्हें प्रस्थापित व्यवस्था में अपनी जबान पर ताला ठोकना पडता है । आज सट्टाबाजारवाले, दलाल,तस्कर तथा बडे -बडे उद्योगपति आज की वर्गसीमित व्यवस्था के प्रतीक हैं ।इस व्यवस्था के इशारे पर ही आज की शासन व्यवस्था निर्णय लेती है । उनके ही हित तथा अहित का विचार किया जाता है । जनता के हित एवं कल्याण से जुड़ी राजनीति नहीं है । वह तो कुर्सी से चिपकी चापलूसों की राजनीति बन चुकी है । इसलिए कवि ने इस निरंकुश राजसत्ता पर करारा व्यंग्य किया है ।

आज की शासन व्यवस्था जनता से पूरी तरह विमुख है। दिल्ली में चकाचौंध है, गली में अंधियारा है । जब दिल्ली की चकाचौंध गली तक पहुँचेगी तब ही यह राजनीति सफल हो सकती है । कहने का -तात्पर्य यह है कि राजनीतिक व्यवस्था में स्वार्थी और भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति के लोग हैं। वे अपने स्वार्थ के लिए भ्रष्टाचार करते हैं। सरकार द्वारा अनेक योजनाओं का आयोजन किया जाता है परंतु वे योजनाएँ भूखे लोगों तक पहुँच नहीं सकतीं । आज दारिद्र निर्मूलन के लिए अनेक योजनाएँ हैं। जैसे संजय गांधी निराधार योजना,इंदिरा गांधी आवास योजना, दरिद्र रेखा के नीचे आने वाले लोगों की योजना आदि । परंतु इन योजनाओं का लाभ दरिद्र तथा निम्न लोगों तक नहीं पहुँचता । इसलिए यह स्पष्ट होता है कि आज की राजनीति आम जनता से विमुख हो चुकी है।

आज के राजकीय नेता सत्चरित्र बुद्धिमान तथा सहृदय नहीं है । आज के नेता अविचारी, निरंकुश और शोषक हैं । इसलिए महात्मा गांधी जी की राम राज्य की कल्पना साकार नहीं होती । नेताओं में जनहित की भावना नहीं है । वे स्वार्थ में अंधे हो चुके हैं । उनका ध्यान उन लोगों की तरफ नही है,जो भूख से कराह कर प्राण छोडे देते हैं, जो स्वार्थ के लिए स्वधर्म को छोड देते है, जो लोग पेट के लिए हाथ जोडते हैं ।

आज के मंत्री अपनी राजनीतिक स्वार्थ- सिद्धि में ही लगे हुए हैं। वे अगले चुनाव पर ही घात लगाये बैठते हैं। वे राजपुरुष तो अपनी अगली पीढ़ी तक की बात सोचते हैं कि हम ही नहीं ,हमारी अगली पीढ़ी भी राजपुरुष बने या कम से कम हम राजपद पर रहते हुए इतना धन बटोर लें कि अगली पीढ़ी के लिए भी पर्याप्त हों । इस स्वार्थी और भ्रष्टारी वृत्ति के कारण आज नेता लोगों का अधःपतन हुआ है । वे सिर्फ मंच पर खडे रहकर साम्यवाद तथा समाजवाद के नारे लगाते हैं। किसी भी प्रकार से सत्ता प्राप्ति करते हैं। सत्ता मिलते ही जिन लोगों के मत लेकर सत्ता प्राप्त की,उन्हीं लोगों को वे भूल जाते हैं। फिर वे पाँच साल तक उनसे मिलते नहीं, फिर अगला चुनाव पास आते ही उन्हें फिर जनता की याद आती है । इसीप्रकार वे जनता से पुरी तरह विमुख हो जाते हैं ।

आज की राजनीतिक व्यवस्था में राजसत्ता प्राप्त करने के लिए साम्यवाद का प्रचार किया जाता है । परंतु आज तक हमारे देश में साम्यवादी व्यवस्था निर्माण नहीं हो सकी यह हकीकत है । समाजवादी समाज रचना निर्माण करने का प्रयत्न किया जाता है । समाजवादी समाज रचना के नाम पर जनताकाशोषण किया जाता है । जब शासकों द्वारा शोषण किया जाता है अत्याचार किया जाता है तब विद्रोह का जन्म होता है । अन्याय की शृंखला बढ़ती हुई कठोर हो जाती है तब किसी दिन महाविस्फोट फूटता है और मनुष्य अपनी जान हथेली पर लेकर अन्यायी पर टूट पडता है । विद्रोह के कारण समाज से ही जन्म लेते हैं ।

इस काव्य में युद्ध के कारण और उसके दुष्परिणामों पर भी विचार व्यक्त किए हैं। युद्ध राजनीतिज्ञों की स्वार्थमयता, लोलुपता और साम्राज्यवादी वृत्ति के कारण होता है । शासकों की स्वार्थी वृत्ति के कारण युद्ध सामान्य जनता पर लादे जाते हैं । इसमें सामान्य लोग ही अपनी जान की बाजी लगा देते हैं। इसके साथ ही महाभयंकर ऐसे दुष्परिणाम सामान्य जनता को सहने पडते हैं। आज बुद्धिवाद के पीछे युद्ध के नख-दंत छिपे हैं। आज बुद्धि के बाल पर अनेक वैज्ञानिक खोजों द्वारा भयानक विध्वंसक अस्त्र-शस्त्र बनाए गये हैं । जिसके प्रयोग से कुछ ही समय में

मनुष्य हानि तथा वित्त हानि हो सकती है । दो विश्वयुद्धोंका भयानक परिणाम सभी संसार ने देख लिया है । आज विश्व तिसरे विश्वयुद्ध की कगार पर खड़ा है । इसलिए इस युद्ध से हमें बचना चाहिए,नहीं तो यहाँ भयानक विध्वंस हो सकता है ।

प्रजातंत्र भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों की प्रस्थापना करना आवश्यक है । आज हमारे देश में किसप्रकार स्वातंत्र्य, समता,बंधुता इन लोकतांत्रिक मूल्यों का अधःपतन हो रहा है - इसका भी विवेचन प्रस्तुत प्रबंध - काव्य में किया है । आज की जनतांत्रिक व्यवस्था मे लोकतांत्रिक मूल्यों की हत्या हो रही है ।

सारांश रुप से प्रस्तुत प्रबंध - काव्य में कवि ने अनेक राजनीतिकसमस्याओं को उठाया हैं और उसके साथ उन समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत किये हैं । पुरानी "शम्बूक -वध " की कथा को लेकर कवि ने आधुनिक राजनीतिक समस्याओं का विवेचन किया है । कवि अपने इस उद्देश में पूर्णत : सफल भी हुए हैं ।

संदर्भ सूची

1.	डॉ. जगदीश गुप्त	-	शम्बूक लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद - 1 तृतीय संस्करण 1981 कवि-कथन पृ.8-9
2.	------तदैव		------------------------------------ पृ. 9
3.	------तदैव		------------------------------------पृ. 15
4.	------तदैव		------------------------------------पृ. 84
5.	------तदैव		------------------------------------पृ.4
6.	------तदैव		------------------------------------पृ.45
7.	------तदैव		------------------------------------पृ. 12
8.	------तदैव		------------------------------------पृ.6
9.	------तदैव		------------------------------------पृ.29
10	------तदैव		------------------------------------पृ.10
11	------तदैव		------------------------------------पृ. 11
12	डॉ. प्रेमचंद विजयवर्गीय	-	आधुनिक हिंदी कवियों का सामाजिक जीवन दर्शन बाफना प्रकाशन, जयपुर. पृ. 254
13	डॉ. जगदीश गुप्त	=	शम्बूक, पृ. 48
14	डॉ. कृष्णचंद्र का निबंध	-	संपादक - डॉ. महावीरसिंह - नयी कविता की प्रबंधचेतना. पृ. 145
15	डॉ. जगदीश गुप्त	-	शम्बूक, पृ. 32
16	कवि निराला :	-	बेला - निरुपमा प्रकाशन, प्रयाग, संस्करण - 1962 कविता 62, पृ.70
17	डॉ. जगदीश गुप्त	-	शम्बूक , पृ. 51
18	------तदैव		------------------------------------पृ.29
19	------तदैव		------------------------------------पृ.31
20	------तदैव		------------------------------------पृ.53

21 ज्योतिप्रसाद सूद : - आधुनिक राजनीतिक विचारों का इतिहास, चतुर्थ भाग, पृ. 355 तथा 357
आधुनिक कवियों का सामाजिक जीवन दर्शन डॉ. प्रेमचंद विजयवर्गीय, पृ. 188

22 --------------------तदेव ------------------पृ. 188

23 डॉ. जगदीश गुप्त - शम्बूक - पृ. 11-12

24 --------------------तदेव ------------------पृ.68

25 --------------------तदेव ------------------पृ.70

26 --------------------तदेव ------------------पृ.74

27 --------------------तदेद ------------------पृ.77-78

28 --------------------तदेव ------------------पृ.78

29 --------------------तदेव ------------------पृ.52

30 --------------------तदेव ------------------पृ.53

31 --------------------तदेव ------------------पृ.59

32 --------------------तदेव ------------------पृ.75

33 --------------------तदेव ------------------पृ.75

34 --------------------तदेव ------------------पृ.56

35 --------------------तदेव ------------------पृ.57

36 --------------------तदेव ------------------पृ.68

37 --------------------तदेव ------------------पृ.75

38 --------------------तदेव ------------------पृ.48

39 --------------------तदेव------------------पृ48

40 --------------------तदेव ------------------पृ.75

41 --------------------तदेव ------------------पृ.76